पाठ-13

लक्ष्य वेध

आइए, सीखें : ● जीवन को सफल बनाने के लिए लक्ष्य निर्धारित करना ● लक्ष्य प्राप्ति के लिए लगन तथा परिश्रम करना ● शब्द युग्म प्रत्यय, विपरीतार्थक शब्द तथा समास का विग्रह करना ● शब्दों एवं मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग।

***(पाठ परिचय :** लेखक इस निबन्ध के माध्यम से लक्ष्य निर्धारित करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए यदि हम अपने मन और शरीर को संयत रखते हैं तो सफलता सुनिश्चित है।)*

जिस व्यक्ति ने अपना एक लक्ष्य निश्चित कर लिया है, उसने अपने जीवन की एक बड़ी कठिनाई दूर कर दी है। अनिश्चय, भ्रम, भेद और सन्देह से वह ऊपर उठ जाता है। तब उसके सामने केवल एक प्रश्न होता है, लक्ष्य-वेध कैसे होगा, जीवन के उद्देश्य की सिद्धि कैसे होगी।

संसार के मनीषियों और कर्मठ पुरुषों ने लक्ष्यवेध के अनेक उपाय बताए हैं। एक-एक बात पर लम्बे भाष्य और वक्तव्य हमें प्राप्त हैं। पर जीवन में सफलता व लक्ष्यवेध का मंत्र एक ऐसा मंत्र है जो कभी निरर्थक नहीं हुआ और जिसमें अन्य सम्पूर्ण तत्वों का समावेश हो जाता है। हमारे कोश में एक छोटा-सा शब्द है तन्मयता। यह छोटा-सा शब्द ही जीवन में लक्ष्यवेध का मूलमन्त्र है।

तन्मयता का अर्थ है कि जो लक्ष्य है उसी से आप भर जाएँ; उसी में लीन हो जाएँ। वह फैलकर आपके सम्पूर्ण जीवन और कार्य की प्रत्येक दिशा को ढक ले। सोते-जागते, उठते-बैठते, चलते-फिरते प्रत्येक क्रिया में, केवल वही लक्ष्य आपको दिखे, चारों ओर वही वह हो। आपका समस्त ध्यान उसी में केन्द्रित हो। उससे अलग आपका जीवन असम्भव हो जाए।

इस तन्मयता की बात करते हुए इतिहास की दो घटनाएँ याद आ रही हैं। पहली घटना महाभारत काल की है। आचार्य द्रोण राजकुमारों को बाण विद्या सिखा रहे थे। समय पर शिक्षा समाप्त हुई और राजकुमार आचार्य के समीप अन्तिम परीक्षा के लिए एकत्र हुए। आचार्य उन्हें एक वनस्थली में ले गए। एक वृक्ष के ऊपर बैठी चिड़िया की आँखों की पुतली के लक्ष्यवेध

शिक्षण संकेत : ■ संकल्प एवं दृढ़ इच्छा शक्ति से महान बने महान व्यक्तियों के बारे में बताएँ। ■ ऐसे प्रेरक प्रसंग सुनाएँ, जिनसे बच्चों में सफलता प्राप्त करने की इच्छा जागृत हो। ■ गद्य का भावार्थ रोचक ढंग से स्पष्ट करें। ■ द्रोणाचार्य और अर्जुन के बारे में बच्चों को विस्तार से बताएँ। ■ बच्चों को प्रेरक सूक्तियाँ तथा अनमोल वचन बताएँ।

का निश्चय हुआ। आचार्य ने सबको निशाना ठीक करने को कहा और तब एक छोटा-सा प्रश्न किया-

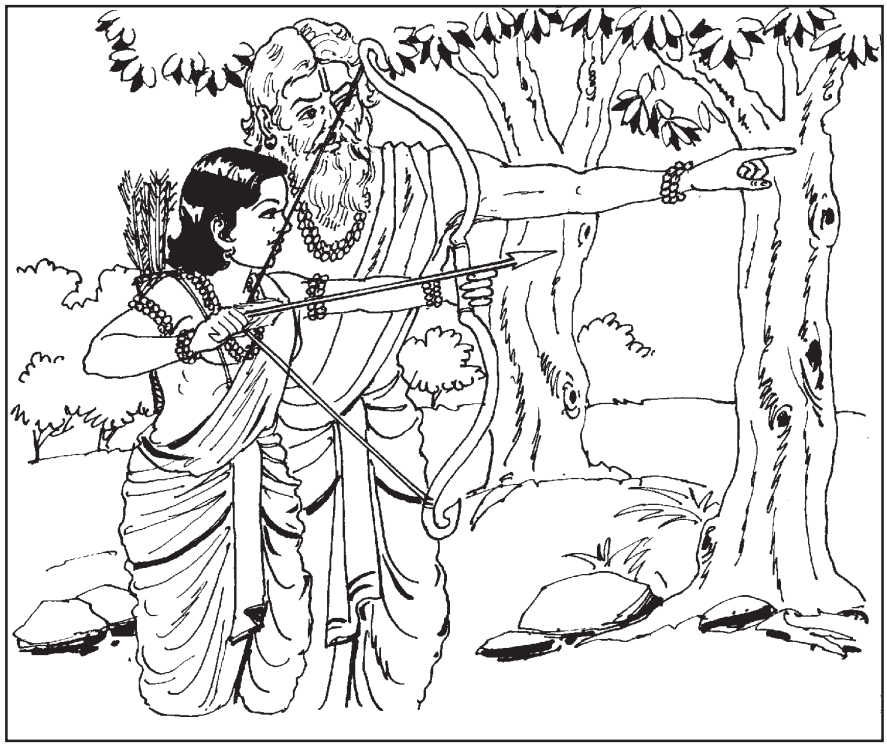

''तुम्हें क्या दिखाई देता है?''

किसी ने कहा, 'वह वृक्ष की पतली टहनी है; उस पर लाल रंग की चिड़िया बैठी है, उसकी आँख दिखाई दे रही है।' किसी ने कहा, 'मुझे चिड़िया दिखाई देती है और उसकी आँख में मैं निशाना लगा रहा हूँ।' मतलब किसी ने कुछ उत्तर दिया, किसी ने कुछ; पर सबको अनेक पदार्थ दिखते रहे और उनके बीच लक्ष्यवेध की तत्परता भी दिखाई पड़ी। जब अर्जुन की बारी आई और आचार्य ने उनसे वही प्रश्न दोहराया तो उन्होंने कहा-

''गुरुदेव, मुझे सिवाय आँखों की पुतली के और कुछ दिखलाई नहीं देता है!''

आचार्य ने शिष्य की पीठ ठोकी और आशीर्वाद दिया। अर्जुन परीक्षा में सफल हुए।

दूसरी घटना अपेक्षाकृत नई है। यह मराठा इतिहास की एक घटना है। सिंहगढ़ की विजय का दृढ़ संकल्प लिए मराठों ने उस पर आक्रमण किया। कमन्द की सहायता से वे सिंहगढ़ पर चढ़ गए। घोर युद्ध हुआ। युद्ध में उनका नेता ताना जी मारा गया। उसके मारे जाते ही मराठों की सेना हिम्मत हार कर भागने लगी और जिस रस्से के बल चढ़कर ऊपर आई थी, उसी के सहारे नीचे उतरने का इरादा करने लगी। ताना जी के छोटे भाई, सूर्या जी ने जब यह देखा तो जाकर चुपके से रस्से का किले की ओर वाला सिरा काट दिया और जब मराठे उधर भागे तो चिल्लाकर बोला- ''मराठों, भागते कहाँ हो? वह रस्सा तो मैंने पहले ही काट डाला है।'' जब मराठों ने देखा कि निकल भागने का कोई उपाय नहीं है तब सब ओर से ध्यान हटाकर, अपने लक्ष्य में तन्मय हो गए और सब कुछ भूलकर ऐसे लड़े कि सिंहगढ़ विजय कर लिया।

दोनों घटनाएँ स्वयं अपनी बात कहती हैं। अर्जुन की उस परीक्षा के बाद हजारों वर्ष बीत गए हैं। पर आज भी जीवन की परीक्षा में कोटि-कोटि मनुष्यों के सामने आचार्य द्रोण का वही

प्रश्न उपस्थित है- तुम्हें क्या दिखाई देता है? मानव जीवन की सफलता-असफलता की यह एक चिरन्तन कथा है। यह लक्ष्यवेध का एक ही उपाय बताता है- लक्ष्य में तन्मयता। जहाँ साधक लक्ष्य में तन्मय है, जहाँ उसे और कुछ दिखाई नहीं देता है, जहाँ वह सब कुछ भूल गया है; अपने को भूल गया है, अपने चारों ओर के ध्यान बँटाने वाले पदार्थों को भूल गया है, लक्ष्य है, और लक्ष्य है, और कुछ नहीं, वहाँ लक्ष्यवेध निश्चित है।

दूसरी घटना भी प्रकारान्तर से, वही बात कहती है। जब तक लक्ष्य से निकल भागने का एक मार्ग आपने रख छोड़ा है; जब तक रस्सा काटकर पीछे लौटने की सम्पूर्ण सम्भावनाओं का अन्त आपने नहीं कर दिया है, जब तक लक्ष्य से मन को इधर-उधर हटाने वाला एक भी साधन आपने बचा रखा है तब तक लक्ष्यवेध नहीं होगा।

इन सबमें एक ही बात दोहराई गई है कि लक्ष्य में चित्त को केन्द्रित करके लक्ष्यवेध करो। शरवत्तन्मयो भवेत् बाण के समान तन्मय होना चाहिए। धनुष से छूटने वाला बाण वायुमण्डल में यहाँ-वहाँ नहीं घूमता, वह अपने चतुर्दिक के पदार्थों से नहीं उलझता; वह दायें-बायें ऊपर-नीचे नहीं देखता। वह जिस क्षण छूटता है उसी क्षण से अपने लक्ष्य में केन्द्रित होता है। उसका लक्ष्य एक है, उसकी दिशा एक है। वह सीधा जाकर अपने लक्ष्य में मिल जाता है।

कुतुबनुमा की सुई की भाँति एक दिशा और एक लक्ष्य में केन्द्रित होना ही उद्देश्य सिद्धि का उपाय है। इसी तरह हमारे जीवन के मार्ग में दूसरे सैकड़ों प्रकाश हमें अपने मार्ग से बहका देने के लिए चमकेंगे और प्रयत्न करेंगे कि हमें अपने कर्त्तव्य और सत्य से डिगा दें, पर हमें चाहिए कि अपने उद्देश्य की सुई को ध्रुवतारे की ओर से कभी न हटने दें।

मन की सम्पूर्ण चेतना को, इच्छा शक्ति को किसी एक कार्य, दिशा या लक्ष्य में केन्द्रित कर देना तन्मयता है जब हम सूर्य की किरणों को किसी आतशी शीशे के सहारे एक कागज़ के टुकड़े पर केन्द्रित करते हैं तो वह जल उठता है। जल में प्रच्छन्न विद्युत को कुछ साधनों

से केन्द्रित करके बड़े-बड़े कारखाने चलाए जाते हैं। एकाग्र करके उससे संसार को हिलाया जा सकता है। वैज्ञानिकों का कथन है कि एक एकड़ भूमि की घास में इतनी शक्ति बिखरी हुई होती है कि उसके द्वारा संसार की सारी मोटरों और चक्कियों का संचालन किया जा सकता है।

संसार में काम करने वाले बहुत हैं; काम को बोझ समझ कर करने वाले और भी अधिक हैं; पर लक्ष्य के प्रति समर्पित होकर, उसमें एकनिष्ठ होकर काम करने वाले बहुत थोड़े हैं। पर ये थोड़े-से मनुष्य ही हैं जो संसार को हिला देते हैं, जो अपनी एकाग्रता से जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं। आप अपने लिए जो भी लक्ष्य चुनिए, उसमें अपने मन और शरीर, अपनी सम्पूर्ण चेतना, अपनी सम्पूर्ण शक्तियों को केन्द्रित कर दीजिए। वह और आप एक हो जाइए। दुनिया को भूल जाइए, अपने को भूल जाइए, केवल लक्ष्य का दर्शन कीजिए और तब उसे वेध लीजिए। संसार आपका है, जीवन आपका है, सफलता आपकी है।

- श्रीरामनाथ सुमन

लेखक-परिचय : श्री रामनाथ सुमन - श्री सुमन हिन्दी के एक सफल साहित्यकार हैं। निबन्धकार के रूप में श्री सुमन ने काफी प्रतिष्ठा प्राप्त की है। उन्होंने अपने साहित्य का आधार गांधीवादी विचारधारा को बनाया है। उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं- 'जीवन यज्ञ', 'भाई के पत्र', 'घर की रानी', 'नई जिन्दगी' आदि।

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में से खोजकर लिखिए-

लक्ष्य	सिद्धि	मनीषी
कर्मठ	निरर्थक	तन्मयता
मूल मन्त्र	लीन	केन्द्रित
वनस्थली	तत्परता	दृढ़ संकल्प
चिरन्तन	साधक	प्रच्छन्न
कमन्द	भौतिक पदार्थ	

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

अ) लेखक ने लक्ष्यवेध का मूल मंत्र किसे माना है?

ब) सूर्या जी ने रस्से का सिरा क्यों काट दिया?

स) अर्जुन ने गुरु द्रोण के प्रश्न का क्या उत्तर दिया?

द) वैज्ञानिकों ने घास की शक्ति के बारे में क्या बताया है?

य) उद्देश्य सिद्धि के उपाय के लिए लेखक ने किस मंत्र का उदाहरण दिया है?

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

(क) 'तन्मयता' का अर्थ लेखक ने क्या बताया है? सविस्तार लिखिए।

(ख) सिंहगढ़ पर विजय से जुड़ी मराठा इतिहास की किस घटना का उल्लेख पाठ में किया गया है? विस्तार पूर्वक लिखिए।

(ग) संसार में किस-किस तरह के लोग होते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 4 निम्नलिखित गद्यांशों की व्याख्या कीजिए -

(अ) लक्ष्य में चित को केन्द्रित करके लक्ष्य वेध करो।

(ब) आज भी जीवन की परीक्षा में कोटि-कोटि मनुष्यों के सामने आचार्य द्रोण का वही प्रश्न उपस्थित है-''तुम्हें क्या दिखाई देता है?''

(स) 'लक्ष्य के प्रति समर्पित होकर उसमें एकनिष्ठ होकर काम करने वाले थोड़े हैं!'

प्रश्न 5 नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए-

(क) तन्मयता की बात करते हुए इतिहास की किस घटना का लेखक ने उल्लेख किया है?

(अ) गुप्त काल (आ) वैदिक काल

(इ) आधुनिक काल (ई) महाभारत काल

(ख) वृक्ष पर बैठी चिड़िया की आँखों की पुतली पर निशाना लगाने का आदेश किसने दिया था?

(अ) आचार्य कृपाचार्य (आ) आचार्य द्रोणाचार्य

(इ) अर्जुन (ई) श्रीकृष्ण

(ग) ताना जी के छोटे भाई का नाम था-

(अ) आर्या (आ) सूर्या

(इ) जय सूर्या (ई) आचार्य

(घ) लक्ष्य वेध का एक ही उपाय बताया गया है?

(अ) लक्ष्य में तत्परता (आ) लक्ष्य में एकाग्रता

(इ) लक्ष्य में एकनिष्ठता (ई) लक्ष्य में तन्मयता

(ङ) शक्ति को एकाग्र करके संसार को क्या किया जा सकता है?

(अ) नष्ट (आ) बसाया

(इ) हिलाया (ई) ऊँचा

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 1. 'अ'-खण्ड के नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं, जिनके विलोम शब्द 'ब' खंड में हैं। इनका क्रम सही नहीं है। उन्हें सही क्रम में लिखिए -

अ	**ब**
निरर्थक	अंधकार
असम्भव	अकर्त्तव्य
उपकार	सार्थक
कर्त्तव्य	सम्भव
अनिवार्य	आदि
अन्त	अपकार
प्रकाश	वैकल्पिक

प्रश्न 2. लक्ष्य वेध= लक्ष्य का वेध। इसमें लक्ष्य और वेध दोनों शब्द 'का' विभक्ति से जुड़े हुए हैं। पाठ में इसी तरह के अनेक सामासिक पद आए हैं, जैसे- कार्य-सिद्धि, बाण-विद्या आदि। निम्नलिखित सामासिक शब्दों का विग्रह कीजिए-

सेनापति	दशानन
माखनचोर	पाप-पुण्य
त्रिलोक	पीताम्बर
नीलकमल	ग्रामवास
भरपेट	महाराज

प्रश्न 3. नीचे दिए गए गद्यांशों को पढ़िए और उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

''अन्याय का अन्त, न्याय और प्रेम से ही हो सकता है। अन्याय की प्रतिक्रिया यदि अन्यायपूर्वक की जाए तो अन्याय का ही आदान-प्रदान होता है, जो स्थायी संघर्ष तथा

भेदभाव का ही पोषण करना है। इस कारण अन्याय का उत्तर न्याय और प्रेम से ही देना है, किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि अपने प्रति अन्याय करने वाले में अपने से अधिक बल है तो उसके मन की बात पूरी करने के लिए अपने मन को दबा लें अथवा बदल लें। अन्यायकर्त्ता कितना ही सबल हो, उससे भयभीत न हों। हमें उसके अन्यायपूर्ण प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करना है, भले ही प्राणों की आहुति देनी पड़े।''

(क) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

(ख) अन्याय का अन्त किस प्रकार किया जा सकता है?

(ग) इस गद्यांश में 'न्याय' शब्द का प्रयोग कई शब्दांश या शब्द जोड़कर किया गया है जैसे अन्याय। न्याय में 'अ' उपसर्ग लगाकर 'अन्याय' शब्द बना है। इसी प्रकार 'अ' उपसर्ग लगाकर तीन शब्द बनाइए।

प्रश्न 4. निम्नलिखित प्रत्यय लगाकर तीन-तीन शब्द बनाइए-

1.	आहट	जैसे चिकनाहट	.....	.....
2.	इक	.....	.....	.....
3.	वट	.....	.....	.....
4.	वान	.....	.....	.....

समझिए

क. परिश्रम ही हमारी पूँजी है। ख. वह परिश्रमी व्यक्ति है।

क वाक्य में प्रयुक्त शब्द संज्ञा है और ख वाक्य में 'परिश्रमी' शब्द विशेषण है। 'परिश्रम' और 'परिश्रमी' शब्दों में अन्तर है। इसे समझकर मीठा-मिठास, विशेष-विशेषत:, बूढ़ा-बुढ़ापा में अन्तर समझिए और वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

प्रश्न 5. ऐसे पाँच शब्द लिखिए, जिनमें प्रत्यय और उपसर्ग दोनों का प्रयोग हुआ हो,

जैसे - स + फल + ता = सफलता

योग्यता विस्तार

1. अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आप किस प्रकार का प्रयास करेंगे? आपस में चर्चा कीजिए।
2. लक्ष्य प्राप्त करने संबंधी घटना/कहानी खोजकर बाल सभा में सुनाइए।
3. पाण्डव और कौरवों की परीक्षा संबंधी घटना कक्षा में सुनाइए।